सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 12 ▪ ▪ अंक : 11 ▪ ▪ 5 फरवरी : 2016 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

सूरत में गणाधीशजी का भव्य प्रवेश समारोह

श्री खरतरगच्छ महासम्मेलन

आईये...

दि. 1 मार्च से 12 मार्च 2016

पधारिये...

निहारिये...

भारत भर में उल्लास का वातावरण, देश के कोने–कोने से आयेंगे श्रद्धालु

भारी जनमेदिनी का ठाठ लगेगा....।

सूरत में गणाधीशजी का भव्य प्रवेश समारोह

भगवान महावीर

सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सोच्चं जं छेयं तं समायरे ॥

धर्म सुनकर मनुष्य कल्याण क्या है, यह जानता है और धर्म सुनकर ही पाप क्या है, वह भी जानता है। इस तरह सुनकर ये दोनों जाने जाते हैं। उन में जो श्रेय है, उसी का वह आचरण करे।

After listening to the scriptures, a person knows what is good and what is sinful. Thus, knowing both these through listening to the scriptures, one should practice what is beneficial.

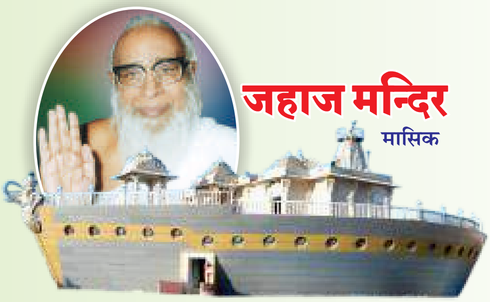

जहाज मन्दिर
मासिक

अधिष्ठाता
पू. गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 अंक : 11 5 फरवरी 2016 मूल्य 20 रू.

संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	07
4. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	09
5. अ. भा. ख. युवा परिषद सूचि	संकलित	11
6. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	12
7. आनन्द श्रावक	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	14
8. मेरे बारे में मेरी अनुभूति	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	18
9. समाचार दर्शन	संकलन	20-28
10. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-116	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	29
11. जहाज मंदिर पहेली 114 का उत्तर		31
12. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	32

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	:	15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	:	11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	:	9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	:	7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	:	3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	:	3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	:	1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन धरा पर

श्री खरतरगच्छ महासम्मेलन

श्रमण सम्मेलन- 1 मार्च से 9 मार्च 2016
श्रावक सम्मेलन- 10 मार्च से 12 मार्च 2016
सभी को पधारने का हार्दिक निवेदन

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

नवप्रभात

बहती हुई नदी तभी तक स्वच्छ रह पाती है, जब तक वह दो किनारों की मर्यादा में जीती है।

सिर के बाल तभी तक संवारे जाते हैं, जब तक वे सिर की मर्यादा से बंधे हैं।

दांतों की सफाई के लिये आदमी तभी तक अपना समय देते हैं, जब तक वे मुख से जुडे हैं।

पतंग आकाश में तभी उड पाती है, तब तक वह डोरी की मर्यादा से बंधी है।

कोई पतंग सोचे कि मैं क्यों किसी की मर्यादा में जीयूं! मैं अपना स्वतंत्र जीवन जीयूंगी। और वह डोरी के बंधन से मुक्त हो जाये तो क्या वह पतंग आकाश की ऊँचाईयों को प्राप्त करने में सफल हो पायेगी?

जीवन मर्यादा के आधार पर जिया जाता है। जहॉं मर्यादा नहीं है, वहॉं व्यवस्था नहीं है। जहॉं व्यवस्था नहीं है, वहॉं मूल्यवत्ता नहीं है।

श्रमण जीवन हो या श्रावक जीवन, मर्यादा की डोर में जब तक बंधे हैं, तभी तक जीवन की विराट् अस्मिता है। मर्यादा बहुत महत्वपूर्ण है।

जहाँ मर्यादा का भंग होता है, वहॉं प्रगति की कल्पना भी नहीं हो सकती।

मर्यादा की चादर बहुत पतली होती है। टूटने... बिखरने के बाद फिर जुड नहीं पाती है।

एक बार मर्यादा टूटती है, फिर टूटती चली जाती है।

उस व्यक्ति को कभी प्रश्रय मत दो, जो मर्यादा तोडता है।

मर्यादा भंग करने वाले को प्रोत्साहित करना व्यवस्था को छिन्न भिन्न करना है।

सच यह है कि मर्यादा ही एक ऐसी कडी है जो सबको अपनी अपनी योग्यता के आधार पर जोड कर रखती है।

गुरूदेव
की कहानियाँ

गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.

अनमोल औषधि: व्रत

जनता से उपाश्रय खचाखच भरा था। धारा प्रवाह ओजस्वी वाणी से अपरिग्रह सिद्धान्त का प्रतिप्रादन गुरूदेव श्री के श्रीमुख से हो रहा था। प्रतिपादन इतना सचोट और हृदयग्राही था कि सारे श्रोता उसी में बहने लगे थे।

प्रवचन की समाप्ति हुई। प्रवचन की प्रतिक्रिया तुरंत सम्मुख आयी। प्रत्येक धनाढ्य एवं सामान्य श्रेणी के श्रोता ने यथाशक्य परिग्रह परिमाण का व्रत स्वीकार किया। एक कोने में पेथड भी बैठा था। उसके चेहरे से दयनीयता छलक रही थी। आँखों में निराशा एवं हृदय में तूफान था।

व्रत का भी अहंकार होता है। अव्रती के समक्ष व्रतधारी उस अहं को प्रदर्शित करता है। कुछ औसत बुद्धि के व्रतधारियों ने व्यंग्य से पेथड को कहा, ''अरे! तूं भी तो कुछ परिमाण कर ले।''

नम्रता से प्रत्युत्तर देते हुए पेथड ने कहा- ''जहाँ दो समय का खाना भी नसीब नहीं होता, वहाँ परिग्रह परिमाण करना व्रत का परिहास ही तो है।''

गुरुदेव ने कहा- कब भाग्य खुलेगा, पता नहीं। तुम्हें अवश्य लेना चाहिये।

पेथड की आँखों से मोती टपक पड़े। उसने कहा- गुरूदेव! आप भी मजाक करते हैं। मुझ गरीब से आप भी सहानुभूति की बजाय दिल्लगी करते हैं।

गुरूदेव ने कहा- नहीं। मुझे मजाक करने का कोई अधिकार नहीं है। मैं तो तुम्हारी भाग्यरेखा देख रहा हूँ। तुम्हारे भविष्य को देखते हुए ही मैंने तुम्हें व्रत लेने को प्रेरित किया है।

पेथड आराधक और सरल था। उसे जिनशासन पर अटूट विश्वास था। वह तुरंत खड़ा हो गया और कहने लगा- जो आपकी आज्ञा!

गुरूदेव ने कहा- बोलो कितना रखना है?

पेथड ने संकुचाते हुए कहा- गुरूदेव! पाँच हजार।

लोग उसी बात सुनकर हँस पड़े। पेथड शर्म के मारे पानी-पानी हो रहा था। उसे भयंकर अपमानित होना पड़ा था पर क्रोध की बजाय शर्म उसके चेहरे पर स्पष्ट दिख रही थी।

गुरूदेव ने पूर्ण गम्भीरता से कहा-नहीं बन्धु! कम से कम पाँच लाख तो रख ही लो।

लोगों को एक और सूत्र हाथ लगा उन्होंने कहा- हाँ भाई! अब गुरू महाराज ने कहा है तो अवश्य ही पाँच लाख का तूं मालिक बन जायेगा। अब जल्दी से तूं नियम ले।

पेथड बार-बार मजाक का पात्र बन रहा था अत: अब उसकी झिझक भी कुछ कम हो गयी थी। वह खड़ा हुआ और नियम ले लिया।

पेथड के पूर्वज नीमाड़ में रहते थे। प्रमुख सेठों में उनका नाम था पर जब सम्पत्ति द्वार से विदा होने लगी तो पेथड को उन परिचितों के मध्य गरीबी की रेखा के तहत रहते हुए शर्म लगने लगी। वह अपने पुत्र-पत्नी सहित माण्डवगढ़ आ गया था।

व्रत ग्रहण के बाद उसका पुण्य प्रकट हुआ। घी के व्यापार के दौरान उसे चित्रबेल की प्राप्ति हुई। चित्रबेल एक अद्‌भुत वनस्पति होती है, वह किसी पात्र के नीचे रहे तो वह पात्र खाली नहीं होता।

चित्र-बेल के प्रभाव से धन की भरपूर वृद्धि होने लगी।

पेथड ने जब देखा-धन पाँच लाख से अधिक हो रहा है तो उसने तुरन्त जरूरतमन्दों को सहायता उपलब्ध करवानी आरम्भ कर दी।

निंदक और आलोचक दोनों बढ़ने लगे। राजा को चित्रबेल के बारे में कुछ आलोचकों द्वारा गंध मिल गयी। उसने चित्रबेल की आवश्यकता राजकोष के लिए पेथड के सम्मुख रखी। जिसे उसने तुरन्त स्वीकार कर लिया।

इस घटना ने पेथड के मस्तिष्क को कुछ हिला दिया। संसार की स्वार्थलोलुप प्रवृत्ति ने उसे उद्विग्न कर दिया। वह परिवार सहित आबू प्रदेश पहुँच गया।

भाग्य पेथड पर मेहबान था। पर्वतीय प्रदेश पर भ्रमण करते हुए उसे स्वर्णसिद्ध करने वाला अपूर्व तत्व मिल गया। उसके प्रभाव से वह यहाँ भी दान देने लगा। विराट दानशाला खुलवा दी।

ब्रह्मचर्य व्रत की महत्ता और उत्कृष्टता जानकर उसने बत्तीस वर्ष की भर युवावस्था में उस व्रत को स्वीकार कर लिया।

देव-गुरू-धर्म की अटूट आस्था और ब्रह्मचर्य के प्रभाव से उसके शरीर के परमाणु इतने पवित्र बन गये कि उसके शरीर का वस्त्र अगर किसी बीमार पर डाल दो तो वह तुरन्त रोगमुक्त हो जाता था।

नृप जयसिंह ने उसके उदार और सौम्य व्यवहार की चर्चा सुनी। अच्छी तरह परखकर पेथड को प्रधान पद पर एवं झांझण जो उसका पुत्र था उसकी कोटवाल पद पर नियुक्ति कर दी।

पेथड राजकार्यों को व्यवस्थित रूप से संभालता रहा। राजा जयसिंह के हृदय में पेथड के प्रति सम्मान था। चारों ओर अमन चैन की बाँसुरी बज रही थी।

पेथड व झांझाण के साये तले राजा-प्रजा सभी सन्तुष्ट थे।

एक बार रानी लीलावती को भयंकर बुखार आ गया। राजा जयसिंह ने अपनी प्रिय पत्नी के इलाज में किसी प्रकार की कसर नहीं छोड़ी पर बुखार था कि उतरने का नाम नहीं ले रहा था। राजमहल उदास हो गया। राजा को विवश होकर राज्य सभा में जाना पड़ता पर मन रानी के आसपास ही मंडराता।

एक बार राजा स्वयं तो राज्य सभा में था। एक दासी जिसे पेथड के प्रभावशाली शारीरिक परमाणुओं का ज्ञान था तुरंत ही पेथड के घर से चादर ले आयी। रानी ने उसे श्रद्धापूर्वक सिर चढ़ाकर ओढ़ लिया।

कुछ ही समय बाद चादर ने अपना प्रभाव दिखाया। बुखार से रानी मुक्त हो गयी।

एक अन्य दासी जो प्रारम्भ से राजमहलों मे थी। वह राजनीति से अछूती कैसे रहती? उसने सोचा अगर राजा को वास्तविकता मालूम हुई तो निश्चित ही यह दासी पुरस्कृत होगी। मेरे रहते अन्य पुरस्कार पा ले और मैं टकटकी लगाये निहारती रहूँ तो यह मेरी मूर्खता होगी, कुछ षड्यन्त्र रचना चाहिए।

तुरंत उसकी आँखें एक भयंकर षड्यन्त्र घड़ जाने के कारण चमकने लगी।

वह राजा के पास पहुँची और कहा- गुस्ताखी माफ हो तो कुछ निवेदन करना चाहती हूँ।

राजा ने कहा- तुम्हें अभय है। तुम निर्भय होकर बोलो।

दासी ने साहस जुटाया और कहने लगी- राजन्! मैं जानती हूँ- महादेवी को आप प्राणों से भी ज्यादा चाहते हैं पर महादेवी ने आपको धोखा दिया है, वह प्रधानजी में अनुरक्त है। अगर विश्वास न हो तो आप स्वयं ही देख लें। अभी भी प्यार से प्रधानजी के उत्तरीय वस्त्र को लपेटे आनंदमग्न हो रही है।

पुरूष स्वयं बेवफा हो सकता है पर पत्नी की बेवफाई उसे सह्य नहीं होती। राजा की त्यौरियाँ चढ़ गयी। क्रोधाधिक्य के कारण मुँह से झाग उबलने लगे।

उन्होंने हांफते हुए कहा-दासी! जानती है तूं क्या बक बक किये जा रही है! प्रमाण के अभाव में तुझे मौत की सजा भी हो सकती है।

दासी ने विनम्रता से कहा- आपकी यह दासी सहर्ष स्वीकार करेगी। राजा शयनकक्ष में पहुँचे। उसने देखा-दासी ने जो कुछ कहा था सत्य है। उसने सन्दर्भ जानने का प्रयास नहीं किया। क्रोध से बेहाल होकर तुरंत जल्लाद को बुलाया और आदेश दिया- जाओ! रानी को किसी बहाने जंगल में ले जाकर मार डालो। यही संसार है। जिस रानी के अभाव में राजा जीने की कल्पना भी नहीं कर सकता था, जिसके लिए रोम-रोम में प्यार था। आज वही इतनी अप्रिय लग रही थी, कत्ल का आदेश दे दिया था।

(क्रमशः)

प्रीत की रीत

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री श्रेयांसनाथ स्तवन

आनंद प्राप्त करने की अनादि काल की हमारी आकांक्षा है। कोई उस आनंद को जड़ चेतन पदार्थ में ढूंढता है तो कोई उसे अध्यात्म और साधना में ढूंढता है। राग और द्वेष से ग्रस्त चेतना आनंद प्राप्ति की कितनी ही अभिलाषा कर ले परंतु अविच्छिन्न, अखंड और शाश्वत आनंद को पाना तो दूर उसकी छाया तक भी उसे नसीब नहीं होती क्योंकि हम आज जिस वस्तु में आनंद की कल्पना करते हैं, उस वस्तु को पाने के बाद आनंद की वह अनुभूति नहीं होती, जो उसकी कल्पना करते वक्त थी। जिसके पास साइकिल है, वह कार देखकर आहें भरता है। पल-पल उसी को पाने के लिये तरसता है। किसी चमत्कार से वह कार मालिक हुआ परंतु कार पाने का आनंद जितना पहले क्षण में उसने अनुभूत किया था, दूसरे क्षण उतना नहीं रहता। और धीरे-धीरे कार उसके लिये सामान्य वस्तु का रूप धारण कर लेती है। बाहर में जितना भी आनंद पाये, वह सारा अस्थायी है। और इसी कारण उसे खंडित सुखों की श्रेणि में रखा गया है।

अध्यात्म योगी द्रव्यानुयोग के विद्वान् श्रीमद् देवचन्द्रजी खंडित सुखों का त्याग कर शाश्वत सुख की आकांक्षा में प्रभु की शरण में पहुँचे हैं। हृदय में श्रद्धा का सोता है, समर्पण का संगीत है। उन्हें भरोसा है इस बात का कि प्रभु वह द्वार है जिससे होकर आत्मकक्ष में प्रवेश होता है। वे जानते हैं कि प्रभु के प्रति किया हुआ विश्वास अंत में अवश्य ही उन्हें प्रभु बनायेगा। दार्शनिकों ने विश्वास को एक प्रकार से विश्राम की संज्ञा दी है। हमारे हृदय में अशांति, बैचेनी, थकावट इतनी ज्यादा है कि विश्राम लेना आवश्यक हो जाता है। हृदय में किसी शाश्वत चेतना को उपलब्ध महाप्राण पर जब श्रद्धा जम जाती है तो हम असीम आनंद को उपलब्ध हो जाते हैं। क्योंकि अशांति का कारण था मन! उसे तो हमने किसी और के चरणों में समर्पित कर दिया है। और उसे सुना भी दिया है कि अब सारे झंझट 'तूं' संभाल! अब मैं सब छोडता हूँ। मैं वही करूंगा जो तूं करवायेगा।

एक व्यक्ति ने सम्राट् के दरबार में आकर नौकरी हेतु निवेदन किया।

सम्राट् ने पूछा-तुम क्या करोगे? आगंतुक ने कहा- जो मालिक करवायेगा।

सम्राट् की दिलचस्पी बढ़ी। उसने दुबारा पूछा- तुम क्या खाओगे? उसने कहा- जो मालिक खिलायेगा।

- तुम कहाँ रहोगे? जहाँ मालिक रखेगा।

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर मालिक की इच्छा पर समाप्त हो रहा था। अंत में सम्राट् ने पूछा- क्या तुम्हारी अपनी कोई इच्छा नहीं है?

उसने अत्यंत भावभरा समाधान प्रस्तुत किया। उसने कहा- नौकर की अपनी इच्छा की कोई अहमियत नहीं होती। जैसा मालिक कहे, वही हमारी इच्छा है। सुनकर सम्राट् रो पडा। ओ.... हो.... मात्र पेटपूर्ति के लिये भी जब अपनी कामनाओं को नि:शेष कर देना पड़ता है। तब जन्मों जन्मों की बीमारी को समाप्त करने के लिये कितना गहरा समर्पण चाहिये। वे अवाक् रह गये। आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। इतना गहन समर्पण तब बनता है, जब हमारा अहंकार

टूटता है। हम अहंकार से भरे हैं। हमारे मन में स्वयं के प्रति बडी गलतफमियाँ है। अहंकारी मन श्रद्धा को उपलब्ध नहीं हो सकता। श्रद्धा का अर्थ ही वह है कि कोई मुझसे महान् है और यह धारणा हमें क्षुद्र नहीं, अपितु महानता की ओर ले जाती है।

प्रारंभिक क्षणों में श्रद्धा अनिवार्य है और यह श्रद्धा श्रीमद्जी के रोम-रोम में व्याप्त थी। वे श्रेयांसनाथ की स्तुति करते हुए कह उठते हैं-

श्री श्रेयांस प्रभु तणो,
अति अद्भुत सहजानंद रे।
गुण एक विध त्रिक परिणम्यो,
एम गुण अनंत नो वृन्द रे।
मुनिचंद जिणंद अमंद दिणंद परे,
नित्य दीपतो सुखकंदरे ॥१॥

श्री श्रेयांस प्रभु का सहजानंद अत्यंत अद्भुत है। प्रभु का एक-एक गुण तीन प्रकार से परिणमन करता है। इस प्रकार अनंत गुणों के समूह हैं प्रभु! चन्द्र के समान शीतल, उज्ज्वल और दैदीप्यमान, नित्य ही प्रकाशमान् और सुख के स्वामी हैं वे!

श्रीमद्जी ने प्रस्तुत पद्य में द्रव्य के अर्थक्रियाकारित्व को स्पष्ट किया है। अर्थक्रियाकारित्व का अर्थ है- पूर्व स्वभाव का विनाश और नये का उत्पाद! प्रत्येक द्रव्य इस अर्थक्रियाकारित्व से युक्त होता है। यद्यपि कुछ दर्शन ऐसा मानते हैं कि वस्तु कूटस्थनित्य है। परंतु द्रव्य को कूटस्थनित्य माना जाये तो उसमें परिणमन कैसे संभव होगा? कुछ दार्शनिक द्रव्य को क्षणिक मानते हैं। परंतु क्षणिक में अर्थक्रियाकारित्व संभव नहीं होगा। यह तो उत्पाद, व्यय और ध्रुव में ही संभव है। जीव द्रव्य के अतिरिक्त अन्य पाँचों द्रव्य अकर्त्ता है अर्थात् इनमें कोई कर्त्ता नहीं है। इनमें गुणों की परिणति सदैव नियम से परिणमित होती रहती है। जीव द्रव्य की सिद्धावस्था में गुण परिणति सदैव परिणत होती ही है। परंतु वह परिणमन कारक चक्र का आभारी है। अतः आत्मा के जो ज्ञानादि गुण हैं वे त्रिविध रूप से परिणमते हैं। जैसे ज्ञान गुण कारण है। ज्ञान गुण से जो ज्ञेय पदार्थ का ज्ञान हो, वह साध्य फल होने के कारण कार्य है। और उसे जानने की ज्ञान की जो प्रवृत्ति है, वह क्रिया है। इस प्रकार कारण, कार्य और क्रिया की त्रिविधता जिस प्रकार से ज्ञान में उपलब्ध है, वैसे ही अन्य समस्त गुणों में भी उपलब्ध है। इन तीनों ही परिणामों का कर्त्ता आत्मा है।

उपादान रूप से प्रबल कारण करण कहलाता है। उस करण का साध्य फल कार्य तथा करने रूप प्रवृत्ति क्रिया कहलाती है। कारण, क्रिया और कार्य ये भिन्न भी है और अभिन्न भी। काल सत्व और प्रमेयत्व की अपेक्षा से अभिन्न है तथा संज्ञा, संख्या और लक्षण से भिन्न है।

प्रभु सूर्य से भी अधिक प्रकाशमान् है क्योंकि सूर्य तो मात्र दिन में ही आलोक फैलाता है और संध्या होते ही अस्ताचल की ओर लौट जाता है। परंतु प्रभु तो शाश्वत स्व और पर के प्रकाशक अद्भुत और अलौकिक सूर्य है। सूर्य के आगमन को सृष्टि का प्रत्येक प्राणी नहीं बधाता। परंतु परमात्मा को पाकर तो सृष्टि का कण-कण खिल उठता है। यहाँ तक कि नरक के जीव भी परमात्मा की जन्म वेला में क्षण भर के लिये आनंद को उपलब्ध हो जाते हैं।

(क्रमशः)

हार्दिक शुभकामनाओं सहित -
राहुल ए. संघवी - 9408395557, 8735039456
• तमन्ना प्रेजेन्ट्स
• राहुल इवेण्ट
अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी
106, साईं कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

33
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

यदि मैं संयम-वेश का त्याग न करता तो....

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका का नौवाँ श्लोक तो गजब का ही है।

अज्ज अहं गणी हुंतो, भाविअप्पा बहुस्सुओ।
जइहं रमंतो परिआए, सामण्णे जिणदेसिए॥९॥

अर्थात् यदि मैं श्रमण-वेश का त्याग नहीं करता तो आज विपुल श्रुत सीखकर गणि पद से सुशोभित होता

गृहवासी बना वह संन्यासी क्रमशः तन-मन और धन से अशक्त होता है, तब परिवारजनों का तिरस्कार और धिक्कार झेलता हुआ चिन्तन करता है-

ओह! मैंने यह क्या किया? मैं यदि संयम वेश का परित्याग नहीं करता तो आज मैं गीतार्थ महात्मा के रूप में पूजा जाता। बहुश्रुतधर बनकर गणीपद से विभूषित होता, इससे भी अधिक नवकार मंत्र के तीसरे सूरि पद पर प्रतिष्ठित होकर जन-जन के लिये श्रद्धा का केन्द्र बनता।

पर अब क्या हो?

मेरी भूल ही मेरे जीवन की सबसे बडी समस्या बन गयी।

कहाँ पुत्र आदि के तिरस्कार, गाली-गलोच भरी शब्दावली और कहाँ गच्छ में मान-सम्मान और पूजन की होडाहोड। उस उत्प्रव्रजित श्रमण को आज अच्छी तरह याद आ रही है गुरूभगवंत की वात्सल्य से भीनी हित शिक्षा-

मुनि! मैं तेरी बुद्धि से सुपरिचित हूँ। केवल एक बार प्रायश्चित्त लेकर अपनी मानसिक विकृति का प्रक्षाल कर ले। फिर तुझे केवल आगम, व्याकरण, छन्द, कोश, इतिहास आदि का विपुल अभ्यास करना है। ज्ञान की ज्यों ज्यों परिपक्वता बढेगी, त्यों- त्यों सम्यग्दर्शन की विशुद्धि होगी। सम्यग्ज्ञान- दर्शन की विशुद्धि से जुडा तत्त्व सम्यग्चारित्र है। इन तीनों की निर्मलता तुझे साधुता के उच्चतम शिखर तक ले जायेगी। कुछ वर्षों में गणी, पंन्यास और उपाध्याय पद पर विराजमान होने की अर्हता अंकुरित होती, इसके बाद वह दिन भी दूर नहीं होगा, जब तूं आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हो जायेगा। वर्धमान योग्यता तुझे गच्छाधिपति पद तक भी ले जा सकती है।

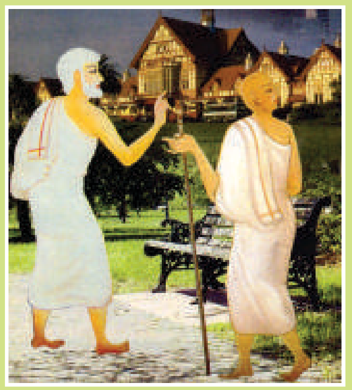

तुम पूरे शासन को आचार की संहिता सिखाओगे। श्रमण एवं श्रावक संघ पर राज करोगे। चारों दिशाओं में तुम्हारा नाम होगा। कभी ख्याति प्रतिष्ठाचार्य के रूप में तो कभी शिविराचार्य के रूप में मिलेगी। श्रेष्ठतम साहित्यकार और प्रवचनकार बनकर उत्तम निर्मल यश का उपार्जन करोगे।

बाह्य व्यवस्था से सम्बद्ध पदों के साथ-साथ रत्नत्रयी की आराधना और तत्त्वत्रयी की उपासना तुम्हें सिद्धत्व का ताज और राज प्रदान करेगी। शुद्ध सात्त्विक और मंगल भावना से वीशस्थानक तप करके परभवों में अरिहंत की श्रेष्ठतम पदवी से भी अलंकृत हो सकते हो।

अहा! कैसा सौभाग्य और सद्भाग्य। योग का साम्राज्य और उत्तमता का ऐश्वर्य।

तुम्हें याद होगी वह घटना जब नकली साधु का असली अभिनय उसके अन्तस् से झिंझोड देता है। अरे! केवल वस्त्र परिवर्तन के कारण एक राज्य का मंत्री बहुरूपिये के चरणों में वंदना कर रहा है, तब मैं असली साधु बन जाऊँ तो क्या नहीं हो सकता? वह गोविन्द मुनि शास्त्रों में आज भी प्रेरणा का स्तूप बना हुआ है।

अरे! शादी करने वाला भी दीक्षा लेकर भावितात्मा बनकर संघ का संचालक और आत्मा का उद्धारक बन सकता है, तो फिर तुम अविवाहित क्यों नहीं?

वत्स! सांप-सीढी का यह खेल ही अजब-गजब का है जो 100 के शिखर तक भी पहुँचा दे, और खेलना नहीं आया तो 1 पर पहुँचा कर अंधेरे कुएँ में भी गिरा दे।

यहाँ रहोगे तो सर्वश्रेष्ठ सत्ता की प्राप्ति होगी और गृहवासी बने तो फिर पतन ही पतन होगा है। सोचना तुम्हें है कि तुम्हारी आत्मा का हित और अहित किसमें है।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद की अभी तक गठित शाखाओं की सूची

शाखा	अध्यक्ष	मो. नं.
1. चेन्नई	सुरेश लूणिया	9444007762
2. मुंबई	चम्पालाल वाघेला	9821032199
3. रायपुर	सुरेश भंसाली	9425233333
4. दिल्ली	मनीष नाहटा	9312729505
5. बैंगलोर	ललित डाकलिया	9844251261
6. भीलवाडा	अरविन्द महात्मा	9413862669
7. अहमदाबाद	अशोक बाफना	9825048197
8. बाड़मेर	सुरेश बोथरा	9413183838
9. दुर्ग	पदम बरडिया	9827159311
10. बालोतरा	पुरुषोत्तम शेठिया	9414108313
11. भिवंडी	अशोक तातेड	9321146784
12. सोलापुर	कल्पेश मालू	9423065041
13. बरोड़ा	अल्पेश झाबक	9825318303
14. इचलकरंजी	मदन सिंघवी	9422583073
15. कोटुर	प्रकाश चोपड़ा	9448356171
16. तिरूपात्तुर	राजेश कवाड	9443270499
17. जगदलपुर	रिषभ नाहटा	9425542499
18. महासमुंद	जय चोपड़ा	9425204459
19. गढ़ सिवाना	नरेन्द्र संकलेचा	9414633179
20. फलोदी	ललित बच्छावत	9352834646
21. कोयम्बटूर	दीपक नाहटा	9443147611
22. तिरपुर	सोहन बोथरा	9363019828
23. धमतरी	निलेश पारख	9425204954
24. रिंगनोद	मनोज मेहता	8120631225
25. सूरत	गौतम हालावाला	9825135775
26. धूले	जीतेन्द्र टाटिया	9823045815
27. दोंडैचा	रितेश गोलेच्छा	9423494044
28. मालेगांव	लूणकरण संकलेचा	9422259656
29. शहादा	महेंद्र खिवसरा	9422792220
30. मांडवला-जालोर	धर्मेन्द्र पटवा	9414152018
31. नंदुरबार	महेन्द्र तातेड	7350685604
32. अक्कलकुआ	मनोज डागा	9421526888
33. सांचोर	गौतम बोथरा	9414373695
34. खापर	अनूपचंद पारख	9423496615
35. गदग	मनोज बाफना	9449005245
36. ब्यावर	यशवंत बाफना	9352411473
37. सेलाम्बा	हिम्मत शेठिया	9427518961
38. भादरेश	राजेंद्र छाजेड	9950677280
39. बेल्लारी	डुंगरचंद बाफना	9342681353
40. नवसारी	राकेश छाजेड	9879559254
41. बेटावाद	किशोर ललवानी	9421615541

अनमोल वचन

समय को दोष देना एक बहाना है, कायरता है। समय कभी भी अच्छा या बुरा नहीं होता। न ही समाज अच्छा-बुरा होता है। हम जैसे होते हैं- समय और समाज हमारे लिए वैसा ही अच्छा-बुरा बन जाता है।

शांति प्रेम मैत्री का नारा, मात्र शब्द व्यापार नहीं। बिना आचरण मात्र शब्द का, जैन जगत में सार नहीं।।
वीतराग प्रभुवर के चरणों में, मेरा जीवन अर्पण। करे मणिप्रभ यही प्रार्थना, पर-हित हो मेरा तन-मन।।

42
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

(गतांक से आगे)

संध्या के इन्द्रधनुषी प्रकाश ने हमारे मन में उत्साह का संचार किया। प्रतिक्रमण की पूर्णाहुति के पश्चात् हम सभी पंक्तिबद्ध गुरुदेवश्री की उपासना करने लगे।

वार्तालाप के सूत्र को आगे बढाते हुए पूज्यश्री फरमाने लगे– मैंने आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म. के दर्शन कर आनंद का अनुभव किया।

पूज्य आचार्यश्री ने मेरा परिचय पूछा। मैंने अपना परिचय देते हुए कहा– मुझे आपके सानिध्य में संयम की आराधना करनी है। मैं जल्दी से जल्दी आपके समुदाय में सम्मिलित होना चाहता हूँ।

पूज्यश्री ने कहा– आये हो... रूको... जान लो... समझ लो.... उतावल न करो...! मैं जल्दबाजी का पक्षधर नहीं हूँ। विधि जान लो... मर्यादा समझ लो... स्वभाव जान लो... हमें भी अपना स्वभाव जानने दो...! अपनी योग्यता से हमारे चित्त को प्रभावित करो। फिर संयम लेना।

मैं पूज्यश्री की निश्रा में अध्ययन करने लगा। मेरी प्रार्थना प्रतिदिन नहीं, प्रतिक्षण होती कि संयम शीघ्र मिले। मैं फिलहाल एक साधक का जीवन जी रहा था। यह वि. सं. 1987 की घटना है। लगभग डेढ वर्ष तक मैं साधक मुमुक्षु की अवस्था में पूज्य आचार्यश्री के साथ रहा।

इस बीच कुछ पूर्व परिचित लोग मिले थे। उन्होंने कहा था कि थली प्रदेश में तो यह प्रचारित किया जा रहा है कि आपसे साधुपना पला नहीं, इसलिये आपने दीक्षा का त्याग कर दिया। मैं मुस्कुरा उठा। तेरापंथ की ओर से किया जा रहा यह प्रचार स्वाभाविक था। क्योंकि पक्ष–व्यामोह यही जवाब दे सकता था। यह कितनी

स्पष्ट बात है कि यदि संयम का पालन दुष्कर था तो मैं मंदिरमार्गी समुदाय में सम्मिलित होने के लिये क्यों प्रयत्नशील था!

संयम की मूल मर्यादा में तो कोई अन्तर नहीं है। तेरापंथ हो या मंदिरमार्गी! पंच महाव्रतों का पालन एक जैसा है... केशलुंचन, पाद विहार, प्रतिक्रमणादि दैनिक विधि.. इन सब में कहीं कोई अन्तर नहीं है। अन्तर मात्र जिन मंदिर की मान्यता का है।

मैंने कहा- आपने उन क्षणों में कितना सहन किया होगा! सही आरोप मन को पश्चात्ताप देता है जबकि झूठा आरोप मन को बैचेन बनाने के साथ कषायग्रस्त कर देता है।

आपश्री ऐसे निमित्त को पाकर भी सहज बने रहे, यह कितनी बडी अनुकरणीय बात है।

पूज्यश्री ने कहा- चलो, हम आगे की बात करें। मैं वि. सं. 1989 की चर्चा कर रहा हूँ। ज्येष्ठ सुदि तेरस के दिन अनूपशहर नामक नगर में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री ने मुझे अपना शिष्य बनाते हुए विधि विधान के साथ दीक्षा दी। मुझे नाम दिया- मुनि कान्तिसागर!

मैंने बीच में सवाल किया- पुन: दीक्षा क्यों हुई! आप तो दीक्षित ही थे न! सिर्फ नाम बदलना था... रजोहरण समुदाय का लेना था... बस!

पूज्यश्री ने कहा- मैंने भी यह जरूर सोचा था। एक बार पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री को पूछा था कि मेरा तेरापंथ का दीक्षा-पर्याय गणना में आयेगा या नई दीक्षा होगी।

तब पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया था- नई दीक्षा ही होगी। (क्रमश:)

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

1– आनंद श्रावक

(गतांक से आगे)

संसार और व्यापार की सारी जिम्मेदारी पुत्र-परिवार को सौंपकर वह आत्म-साधना के इस महातप-यज्ञ में त्रिकरण- त्रियोगपूर्वक जुट गया।

यद्यपि उसका देह-बल प्रतिदिन क्षीण हो रहा था परन्तु आत्म-बल प्रतिक्षण बढ़ रहा था। जब सूर्य का ताप और फूल की खुश्बू छिप नहीं सकती तो फिर उससे सहस्रगुणा दीप्तिमान् तप का तेज और साधना की सुरभि भला कैसे छिपी रहती!

उसकी साधना का यश शनैः शनैः घर की चार दीवारों को लांघकर पूरे नगर में प्रसारित होने लगा। शीघ्र ही आनंद का आलोक नगर की सीमाओं का अतिक्रमण कर दूर-दूर तक व्याप्त हो गया।

क्रमशः सफलतापूर्वक दस प्रतिमाएँ पूर्ण करते हुए ग्यारहवीं श्रमणभूत प्रतिमा की भीष्म साधना में आरूढ़ हुआ श्रावकश्रेष्ठ आनन्द !

ग्यारहवीं प्रतिमा, जिसमें श्रमण वेश धारण कर ग्यारह महिनों तक साधना में अकंप रहना। आनंद के मुख पर छायी तप की कान्ति को देखकर जन-जन की जुबां पर उसकी विशिष्ट साधना की ही चर्चा थी।

दीर्घकालीन तप-साधना निराबाध सफलतापूर्वक गतिमान थी। उसमें चंचलता और विकलता को कोई स्थान न था। सुदीर्घ तपश्चरण, चिन्तन और ध्यान की आराधाना से उसका शरीर सूख गया। क्षीण हो रही देह-शक्ति के मध्य उसकी धर्म-साधना उत्तरोत्तर अधिक वेग और धृति को धारण कर रही थी।

एक बार धर्म-जागरिका करते हुए उसे विचार आया-इस सत्त्वहीन काया की शक्ति क्षीण हो चुकी है। भक्त-पान की अब कोई अपेक्षा भी नहीं है।

यद्यपि शरीर अब अस्थि-पंजर मात्र रहा है तथापि अभी भी मुझमें धृति, पुरूषार्थ और श्रद्धा अवशिष्ट है, अतः भक्त-पान से देह-पोषण न करके शेष जीवन में संलेखना व्रत धारण करना चाहिये।

संलेखना यानि जल-आहार का स्वेच्छा से त्याग...! आनन्द और उत्साह से मृत्यु को आमन्त्रण। न तो मृत्यु से भयभीत होना है, न उसकी तुच्छ कामना करनी है। बस! इच्छा और द्वेष से परे रहकर साधना में एकमेक हो जाना है।

आनन्द श्रावक अपने भूतकाल के सारे पापकर्मों की गर्हा करते हुए सम्यग्रूपेण आलोचना पूर्वक संलेखना में प्रवृत्त हो गया।

अब तक शरीर को थोडा-बहुत पोषण मिल रहा था, वह भी अब बन्द हो गया।

कोई कामना... कोई याचना शेष नहीं रही थी उसके आत्म-परमाणुओं में!

न चक्रवर्ती, वासुदेव अथवा प्रतिवासुदेव पद की झंखना थी... न देव-देवेन्द्र बनने का मनोभाव।

केवल मोक्ष प्राप्ति की अभिलाषा।

कर्म-जंजीरों से मुक्ति की झंखना !

प्रतिपल तप में निर्मलता...ध्यान-स्वाध्याय में पवित्रता बह रही थी। संलेखना की महासाधना में मोह-अज्ञान के सारे विकार विनष्ट हो रहे थे।

तप-साधना के इन पलों में आभामण्डल का विशुद्धिकरण हो रहा था। पावन संकल्पों से उसकी भावनाएँ उत्तरोत्तर शुक्ल-ध्यान और संवेग से परिपूर्ण होती जा रही थी।

क्रमशः बढती लेश्या की निर्मलता।

प्रकृष्ट अध्यवसायों की निःस्पृहता।

प्रतिमा साधना के प्रति प्रतिपल जागरूकता।

मृत्यु को महोत्सव बनाने वाली दिव्य आराधना में एक ऐसा विशुद्ध विचार वलय निर्मित हुआ कि आनंद की आत्मा ने ज्ञानावरणीय कर्म बंधनों को शिथिल कर दिया और अवधिज्ञान नामक अलौकिक प्रकाश से उसकी चेतना जगमगा उठी। वह उसके प्रभाव से छहों दिशाओं में दूर-सुदूर स्थित पदार्थों को जानने एवं देखने लगा।

अवधिज्ञान सहित संलेखना के उन्हीं दिनों में अवनितल को पावन करते हुए भगवान महावीर वाणिज्यग्राम पधारें।

आनन्द की आत्मा से तो जैसे फूल खिरने लगे। उसकी काया खुश्बू से महक उठी।

मोक्षरथ के सारथी का आगमन ज्ञातकर आनंद के रोम-रोम में हर्ष व्याप्त हो गया- हे प्रभो! यह महासाधना आपकी कृपादृष्टि का ही परिणाम है, अन्यथा मुझमें वह शक्ति कहाँ, जो इस उत्कृष्ट भीष्म साधना में खरा उतर सकूं।

कृपानिधे! आपके उपकारों के अथाह समन्दर में मैं परम पवित्र हो गया हूँ। ओ वीतरागी। ओ मेरे अन्तर्मन में बसे करूणाकर ! आपकी अनन्त करूणा का किनारा कोई कैसे पा सकेगा?

गौचरी के लिये पधारे गौतम स्वामी ने जब लोगों के मुख से सुना कि आनन्द श्रावक को अवधिज्ञान उत्पन्न हुआ है, तब मिलने के लिये वे गाथापति आनन्द के घर पर पधारे। ज्योंहि 'धर्मलाभ' शब्द आनंद ने सुना, उसका हृदय-कमल खिल उठा। 'मत्थएण वंदामि' से वंदन किया।

गुरुदेव! आपने इस छोटे सेवक पर बड़ी कृपा की। आप पचास हजार शिष्यों के स्वामी और मैं आपका एक सामान्य श्रावक। आपके पुनीत दर्शन पाकर मेरे लोचन ही नहीं, जीवन भी धन्य हो गया है। गौतम सस्मित आनंद के पुलकित चेहरे को देखते रहे।

आनंद करबद्ध होकर बोला- प्रभो! मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। कल्पवृक्ष मेरे घर-आँगन में अवतरित हुआ और मैं सामने भी न आ सका। मैं कितना पापी कि उठकर चरणों की वंदना भी नहीं कर पा रहा। मेरी धृष्टता क्षमा करें। उसकी आँखों में अश्रुबिन्दु छलक उठे।

गौतम स्वामी बोले- आनंद! मैं जानता हूँ तुम ग्यारहवीं प्रतिमा की विशिष्ट साधना में गतिमान हो। तुम्हें शाता तो है न?

आनंद बोला- प्रभु और गुरु की कृपा का छत्र जिसके सिर पर हो, वहाँ विघ्न के सुमेरू भी ध्वस्त हो जाते हैं तो फिर अशाता का प्रश्न ही कहाँ?

आनंद! मैंने सुना है कि तुम्हें अवधिज्ञान हुआ है।

समर्पण की दिव्यमुद्रा में आनंद बोला- यह सब देव-गुरु की कृपा का ही परिणाम है, वरना मुझमें वह योग्यता कहाँ?

जन्म-जन्मान्तरों में भी कैसे चुका पाऊँगा आपके उपकारों के इस ऋण को।

पर आनंद यह तो बताओ कि तुम कितना क्षेत्र देख रहे हो इस ज्ञान में?

भगवन्! पूर्व-पश्चिम एवं दक्षिण दिशा में लवण समुद्र के 500 योजन तक, उत्तर दिशा में हिमवन्त पर्वत पर्यन्त, अधोलोक में लोलुक नरकावास एवं उर्ध्वलोक में सौधर्म देवलोक तक। इतना क्षेत्र मैं अवधिज्ञान-प्रकाश में हस्त आमलकवत् स्पष्ट देख रहा हूँ।

यह सुनकर सभी प्रसन्न थे परन्तु गौतम स्वामी अचरज से भर गये। एक श्रावक को इतना विस्तृत ज्ञान कैसे हो सकता है?

चकित आँखों से आनंद पर गहरी दृष्टि डालते हुए उन्होंने कहा- मैंने प्रभुमुख से सुना है कि श्रावक को अवधिज्ञान हो सकता है, परन्तु इतनी विराटता उसमें संभव नहीं है। उपयोग में कहीं भूल तो नहीं हो रही श्रावक प्रवर?

भगवन्! आप स्वयं ज्ञानी है तथापि छोटे मुँह बड़ी बात कर रहा हूँ। उपयोग-अनुपयोग की बात इन्द्रिय-जन्य ज्ञान में संभव है परन्तु जो ज्ञान आत्मा से पूर्णतया प्रत्यक्ष है, उसमें उपयोग अथवा अनुपयोग की भूल कैसे संभवित है भगवन्! आनंद के शब्दों में जितनी दृढ़ता थी, उतनी ही नम्रता भी थी।

(क्रमशः)

	श्री आदिनाथाय नमः	
	खरतरबिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिसद्गुरुभ्यो नमः	
	श्री दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी जिनचन्द्रजिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिसद्गुरुभ्यो नमः	
	पू. गणनायक श्री सुखसागरसद्गुरुभ्यो नमः	
श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावनधरा पर
श्री खरतरगच्छ
महा सम्मेलन में
श्री सकल संघ को
सस्नेह निमंत्रण
साधु
श्रावक

साध्वी सम्मेलन

दिनांक 01 से 9 मार्च 2016 तक

-: आज्ञा एवं निश्रा :-

प.पू. गुरुदेव गणाधीश उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

श्रावक सम्मेलन

दिनांक 10 से 12 मार्च 2016 तक

: महासम्मेलन के मुख्य उद्देश्य :

* समाचारी में एकरुपता लाना।
* पदों और उसकी व्यवस्था का निर्धारण करना
* साधु-साध्वी शीक्षा हेतु डिग्री पाठ्यक्रम बनाना
* पाठशालाओं हेतु पाठ्यक्रम का निर्माण करना
* खरतरगच्छ स्थापना दिन तय करना
* खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी के आयोजन की रुपरेखा तय करना
* गच्छ समाचारी की शास्त्रीयता का बोध व प्रचार
* वृद्ध साधु-साध्वीयों की वैयावच्च-सेवा
* स्थानीय संघों का गच्छ के विकास में योगदान हेतु विचार * साधर्मिक उत्कर्ष हेतु विचार
* गच्छ के युवा समाज का जागरण * आमंत्रण पत्रिका की एक रुपता होना।

पदारोहण समारोह : दि. 12 मार्च 2016

आवास आरक्षण हेतु संपर्क

BABULAL LUNIA: 9913309898, SURESH LUNIA : 9444007762

ON LINE

ALSO BOOK ONLINE ON www.mahasammelan.com

आयोजक : श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन आयोजन समिति

श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड, पालीताणा - 364270 (गुज.), Tel. 02848-252653 E-mail : sammelan2016@gmail.com

सम्पर्क							
मोहनचन्द ढड्ढा 98410 94728	विमलचन्द सुराणा 9829053323	भंवरलाल छाजेड़ 9967022183	तेजराज गुलेच्छा 94483 87442	विजयराज डोसी 93437 31869	त्रिलोकचंद बरड़िया 98271 26100	पद्मकुमार टाटिया 98408 42148	दीपचंद बाफणा 98250 06235

अनुरोध : इस ऐतिहासिक आयोजन में तन, मन, धन से जुड़कर पूर्ण रुप से सफल बनावें।

व्यवस्था सहयोगी : अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद

ON LINE बुकिंग, सुझाव एवं अन्य जानकारी के लिए www.mahasammelan.com

मधुर संस्मरण

बहिन म. साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

मेरे बारे में मेरी अनुभूति

एक बार में कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्रचार्य द्वारा रचित वीतराग स्तोत्र का स्वाध्याय कर रही थी। इस स्तोत्र में एक श्लोक बड़ा महत्वपूर्ण लगा। उस श्लोक में परमात्मा की आज्ञा की तुलना परमात्मा की पूजा से की गयी थी। मैं उस श्लोक पर जैसे अटक ही गयी। श्लोक अत्यंत भावपूर्ण एवं महत्वपूर्ण था। रोम-रोम जैसे उस श्लोक के भावों में डूबकर एक एक होना चाहता था। श्लोक के बोल थे-

''वीतराग सपर्याया स्तवाज्ञा पालन परम्।
आज्ञाराद्धा विराद्धा च शिवाय च भवाय च॥

वीतराग परमात्मा की पूजा की अपेक्षा उनकी आज्ञा का पालन अत्यंत महत्वपूर्ण है। परमात्मा की आज्ञा का पालन कल्याणकारी हैं और प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन संसार बढाने वाला हैं।

इस पंक्ति ने मेरे हृदय को जितना आनंद दिया उतनी सर्वविरति धर्म स्वीकार किया परन्तु क्या परमात्मा की आज्ञा का पालन आज्ञा के प्रति जागरूकता..... आज्ञा के प्रति बहुमान में जागरूकता है।

आज्ञा का पालन बाद में होता है प्रारंभ में आज्ञा के प्रति जागरूकता पैदा होना आवश्यक है। मैंने वस्तुपाल तेजपाल का जब जीवन चरित्र पढ़ा था तब उनके जीवन की एक घटना ने हृदय को आनंद भरा आश्चर्य दिया था।

इतिहास कहता हैं कि वस्तुपाल तेजपाल अपनी समस्त समृद्धि शासन एवं सामाजिक कार्यो में व्यय करके जब महाराजा वीरधवन की सेवा में धोलका उपस्थित हुए और कुलदेवी की संकेत से महाराजा ने उन्हें अपने पास रहने के लिये निवेदन किया तो उन्होंने अपनी तीन शर्ते रखी।

इन तीन शर्तो में प्रथम शर्त थी परमात्मा की। इस शर्त के द्वारा वस्तुपाल तेजपाल ने प्रारंभ में ही प्रकट कर लिया कि वे जिनाज्ञा एवं जिनेश्वर परमात्मा के प्रति कितने गहरे समर्पित थे।

उन्होंने कहा- हम आपकी प्रत्येक आज्ञा एवं राज्य की जिम्मेदारी से जुडे रहेंगे परन्तु आपकी उस आज्ञा को भी स्थिति में स्वीकार नहीं करेंगे जो जिनाज्ञा के विपरीत होगी।

राजा तो सुनकर जैसे फिदा हो गया। वही व्यक्ति वफादार एवं कर्त्तव्यनिष्ठ हो सकता हैं जिसे अपनी चेतना के प्रति प्रेम हो। जो अपनी चेतना से बंधा हैं वह कभी अन्य किसी के लिये बाधा नहीं हो सकता। जो आत्मा का हैं वह सबका हैं। जो आत्मप्रिय है वही परमात्मा के लिये जागरूक हो सकता हैं।

परमात्मा की आज्ञा के प्रति पूर्ण निष्ठा जिसके जीवन का लक्ष्य हैं निसंदेह वही मोक्षगामी हो सकता हैं। वस्तुपाल तेजपाल के जीवन की इस घटना ने मुझे बेहद उद्वेलित किया।

वस्तुपाल तेजपाल सांसरिक जीवन जी रहे थे। सता व सम्पति सांसारिक होने के नाते उनके जीवन की उड़ान में बहुत महत्व रखती थी फिर भी उन्होंने कितनी निस्पृहता से राजा से कह दिया कि हम पहले परमात्मा के अनुयायी हैं बाद में आपके हैं।

उनकी आत्मा कितनी सत्वशाली रही होगी? क्या ऐसी तेजस्विता एवं सत्व मेरे भीतर प्रकट हो सकता है। ऐसा सत्व प्रकट करने के लिये क्या मैंने कभी पुरूषार्थ किया है? अगर मैंने पुरूषार्थ नहीं किया तो क्यों नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि मुझे अपने आराध्य के प्रति वह श्रद्धा... वह प्रेम... वह भक्ति ही नहीं हो।

यह तय है कि जहाँ अपनत्व हो श्रद्धा एवं निष्ठा हो वहाँ

उनकी आज्ञा का पालन किये बिना रह ही नहीं सकता। अभी तक हमारा प्रेम हमारे शरीर, हमारी इन्द्रियाँ एवं हमारी सुविधा से अवश्य है। अगर मेरा प्रेम, मेरी आत्मा या मेरे, भगवान से हो जाता तो क्या मैं भगवान की इच्छा या आज्ञानुसार अपना जीवन नहीं बनाती। अगर ऐसा होता तो भगवान् और उनकी आज्ञा ही रहती।

अभी तो मेरे केन्द्र में मेरा भौतिक जीवन है अथवा परम द्रव्यानुयोगी श्रीमद् देवचन्द्रजी म. के शब्दों में ''राग द्वैष भर्यो मोह वैरी नड्यो'' मेरा जीवन राग और द्वेष से परिपूर्ण है। इन दोनों ने मेरी आत्मा को पूरी तरह अपने कब्ज में कर लिया हैं और इसी कारण मैं अनादि काल से चारों गतियों में विभिन्न प्रकार के दण्ड से दण्डित होता जा रहा हूँ।

अगर स्वयं को दण्ड से बचाना हो तो एक ही उपाय हैं प्रभु की आज्ञा का पालन।

प्रभु की पूजा करने वाला मुक्त होगा ही यह तय नहीं है

परंतु जो प्रभु की आज्ञा का शुद्ध श्रद्धा के साथ पालन करता है

नि:संदेह वह जन्म मरण से मुक्ति पा सकता है। परमात्मा की आज्ञा ही सब कुछ है।

जिस वीतराग स्तोत्र के एक श्लोक पर मैं अटकी थी वह श्लोक वीतराग स्तोत्र का था और उस वीतराग स्तोत्र की रचना मात्र कुमारपाल महाराजा के निवेदन पर कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्रचार्य ने की थी।

मेरे मन में प्रश्न उठा कि एक परम ज्ञानी आचार्य भगवंत ने एक सघाट के लिये इतने बड़े ग्रन्थ की रचना क्यो की? ऐसी क्या विशिष्टता कुमारपाल महाराजा में थी? क्या उनकी सत्ता ने आचार्य भगवंत हो मोहित किया? पर अपनी इस राय पर तुरंत ही मुझे संकोच हो आया। इतने बड़े ज्ञानी गुरूदेव क्या सत्ता जैसी .....शक्ति से प्रभावित हो सकते हैं? वे प्रभावित हुए मात्र कुमारपाल महाराज के समर्पण के पति उनकी आज्ञा की आराधकता के प्रति।

जब से कुमारपाल महाराजा ने आचार्य श्री को अपना गुरू स्वीकार किया फिर अपनी जीवन शैंली का निर्माण गुरू की आज्ञानुसार ही किया।

गुरूदेव ने बालक जीवन की व्याख्या के अन्तर्गत कहा विवेकमन आचरण अंहिसायुक्त आचरण सम्यक दर्शन की प्रारभिक भूमिका हैं कुमारपाल के अन्तर्गत किसी भी कारण से प्रवास प्रवास नहीं करूगा। चुकि चातुर्मास की अवधि में जोवोत्पत्ति अधिक होती है अत: चातुर्मास में आवागमन उन जीवो की पीड़ा का कारण होगा।

कल्पना करे हम अपने जीवन की। सभंवत: हम आवरण करते समय यह याद भी नहीं रख पाये कि मेरा अपने शरीर और अपनी भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में किसी को कोई कपट हो सकता है। संभवत: हम अपने केन्द्र शरीर को ही अधिक रखते है परमात्मा की आज्ञा या परमात्मा के प्रति निधि पंच .... गुरू भगवंतों की आज्ञा आंशिक रूप में भी नहीं उतर पानी।

कुमारपाल महाराजा के नाम से पूर्व जो विशेषण लगा हैं नि:संदेह वह उनके आचरण के अनुरूप हैं। उन्हें परमार्हत् कहा जाता है। वे परमात्मा के उत्कृष्ट अनुयायी थे।

वे श्रावक जीवन में भी होते हुए भी मेरे लिये आदर्श हैं। मेरे जीवन में भी वैसी ही आज्ञा की आराधना का पुरूषार्थ प्रकट हो।

गीदम नगर (छत्तीसगढ़) में पंचाह्निका महोत्सव सम्पन्न

प.पू. कैवल्यधाम तीर्थ प्रेरिका, शासन प्रभाविका, आगमज्ञा प्रवर्तिनी महोदय श्री निपुणा श्रीजी म.सा. की अन्तेवासिनी प.पू. श्री राजेश श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 की निश्रा में गीदम नगर में चातुर्मास का समापन पंचाह्निका महोत्सव पूर्वक सम्मपन्न हुआ। जिसके अन्तर्गत भक्ताम्भर, नवकार, अठारह अभिषेक, दादागुरूदेव एवं सरस्वती देवी का महापूजन इन्दौर के विधिकारक श्री अरविन्द भाई चौरड़िया के द्वारा विधिविधान सह सम्पन्न हुआ। गीदम के इतिहास में परमात्मा भक्ति का यह प्रथम अवसर था जहाँ लाभ लिया।

उल्लेखनीय है कि मन्दिर मार्गी साधु संतों का विचरण इस क्षेत्र में नहींवत होता है। चातुर्मास भी पहली बार ही हुआ। श्रावकों के 75 घरों में से मन्दिरमार्गी 7 घर ही हैं, लेकिन संघ की एकता संगठन बेमिसाल है। चार माह के लिये सम्पूर्ण गीदम श्रीसंघ मन्दिरमार्गी बन गया था। यह बहुत ही गौरव की बात है।

समाचार दर्शन

गणाधीशजी का डायमंड सिटी सूरत में ऐतिहासिक भव्य प्रवेश

मरूधरमणि, परम पूजनीय गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. आदि ठाणा रायपुर (छत्तीसगढ़) चातुर्मास सम्पन्न कर उग्र विहार करते हुवे 26 जनवरी मंगलवार को सूरत पधारे, जहाँ उनका भव्यातिभव्य मंगल प्रवेश हुआ।

सूरत के श्री संघ में परम श्रद्धेय गणाधीशजी के स्वागत के लिए कई दिनों से जोरों से तैयारियां की जा रही थी।

26 जनवरी को प्रात: 9.00 दर्शन रेजीडेन्सी से सोनल रेजीडेन्सी, सी.इन.जी.पंप, सानिध्य रेजीडेन्सी, डी.जी.पॉइंट, पर्वत पाटिया होता हुआ मधुर बेंड की धुनों पर थिरकते युवाओं के जोश के साथ, अश्व ध्वज, विभिन्न महिला मंडलों द्वारा भव्य सामैया की शोभा यात्रा के रंग बिरंगे पोशकों में सजे धजे महिला पुरूष सकल संघ के साथ मॉडल टाउन स्थित श्री चंद्रप्रभु दिगंबर जैन मंदिर ग्राउंड में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। जहा वरघोड़ा धर्म सभा में परिवर्तित हो गया।

सूरत में विराजित पू. प्रवर्तिनी श्री जिनश्रीजी म. की शिष्याऐं पू. साध्वी श्री सुप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा 2 एवं पू. साध्वी श्री सुरंजना श्री जी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मित्रांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में समारोह को प्राप्त हुई।

यह कार्यक्रम बाड़मेर जैन श्री संघ सूरत एवं श्री कुशल कांति खरतरगच्छ जैन संघ सूरत के संयुक्त तत्वावधान में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् सहित सूरत की विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से किया गया। सभी संस्थाओं के कार्यकर्ता प्रवेश की तैयारियों में कई दिनों से जुटे हुये थे। विशाल पाण्डाल पूरा भरा हुआ था।

कार्यक्रम की शुरूआत गुरुवंदन एवं दादा गुरूदेव के दीप प्रज्ज्वलन से हुई।

उसके बाद मंच संचालक रमेशजी लुंकड ने स्वागत के साथ अपना संचालन आरम्भ किया। भारत भर से आये संघों के प्रमुख और महासम्मेलन के आयोजकों ने खरतरगच्छ इतिहास और सम्मेलन की आवश्यकता के बारे में पूरी जानकारी दी।

आज भारत भर के खरतरगच्छ संघ के अधिकारी, ट्रस्टी, युवा परिषद् के कइ पदाधिकारी सूरत पधारे। और गुरूदेव से 12 मार्च को आचार्य पदवी स्वीकार करने का निवेदन किया।

भारत भर के संघो की तरफ से श्री मोहनचंद जी ढडढा ने गणाधीश जी से आचार्य पदवी स्वीकार करने की विनती की। उन्होंने कहा- कई ज्योतिषियों ने 12 मार्च का शुभ मुहूर्त पद हेतु प्रदान किया है। हमारी विनंती है कि इस मुहूर्त्त में आचार्य पद ग्रहण करें। इस अवसर पर जयपुर, पाली, बेंगलोर, अक्कलकुआ, बीकानेर, भिवंडी, रायपुर, मुम्बई, दिल्ली, भायंदर, इन्दौर, कल्याण, डोम्बिवली, बाड़मेर, बालोतरा, पचपदरा, मौखाब, जिंझनीयालि, सांचोर, सिणधरी, चितलवाना, धोरीमन्ना, चोहटन, इचलकरणजी, सिवाना, मोकलसर, नाशिक, हरसाणी, कारोला, बड़ोदरा, मालेगांव, भादरेस, देवड़ा, ब्यावर, इरोड, तिरपुर सहित लगभग 70 शहरों और गांवों से संघ के लगभग 400 प्रतिनिधि बाहर से पधारे थे।

इस अवसर पर पूज्य गणाधीश श्री मणिप्रभसागर जी म. ने संघों की भावना भरी विनती स्वीकार करते हुये कहा- कि साधु साध्वीजी भगवंतों को जो भी पदवियां प्रदान करना है, उसका निर्णय एक मार्च को साधु साध्वी सम्मेलन में किया जायेगा। और उस निर्णय के अनुसार पद प्रदान समारोह 12 मार्च को शुभ मूहर्त में आयोजित किया जायेगा।

पूज्यश्री ने कहा- मुहूर्त्त के विषय में मतभेद है। आरंभ सिद्धि, दिन शुद्धि दीपिका आदि जैन ग्रन्थों व सनातन ज्योतिष के ग्रन्थों में उल्लेख है कि सिंहस्थ गुरु जब मघा नक्षत्र भोग लेता है, तो उसके बाद मुहूर्त्त शुद्ध हो जाता है। इस आधार पर यह मुहूर्त्त प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा- पद महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण मर्यादा है। मर्यादा और अनुशासन से ही गच्छ प्रगति करता है।

पूज्य गुरूदेव ने सूरत केयुप युवा परिषद् के बारे में कहा कि युवा कार्यकर्ताओं ने बहुत ही कम समय में दोनों संघों

के साथ मिलकर बहुत ही सुन्दर आयोजन किया। इस पुनीत अवसर पर सर्व श्री मोहनचंदजी ढढा चेन्नई, विमलचंद जी सुराणा जयपुर, संघवी तेजराजजी गोलेच्छा बैंगलोर, संघवी विजराजजी डोसी बेंगलोर, भंवरलालजी छाजेड़ मुम्बई, पदमचंदजी टाटिया चेन्नई, मोतीलाल जी झाबक रायपुर, संघवी वंसराजजी भंसाली अहमदाबाद, ज्योति जी कोठारी जयपुर, प्रकाशजी कानूगो मुंबई, सुरेश जी लुनिया चेन्नई, महेन्द्र जी रांका बेंगलोर, बाबूलालजी लुनिया अहमदाबाद, घेवरचंदजी तातेड अहमदाबाद, श्री संतोषचंदजी गोलेच्छा रायपुर, मांगीलाल जी श्री श्री माल सांचोर, संघवी बाबूलाल जी मरडीया मुम्बई, नरेश जी पारख बड़ोदरा, मांगीलाल जी श्री श्री माल सांचोर, रतनलाल जी संकलेचा बाड़मेर, पुरषोतम जी सेठिया बालोतरा, प्रकाश जी छाजेड़ जालोर, दीपचंद जी कोठारी ब्यावर, श्री प्रकाशचंदजी मालू इन्दौर, श्री शेखावत इन्दौर, श्री कमल मेहता इन्दौर, श्री डूंगरचंदजी हुण्डिया इन्दौर, श्री अमृतलालजी कटारिया बालोतरा, श्री पुखराजजी ललवानी इचलकरंजी, श्री गौतमजी वडेरा इचलकरंजी, श्री सुमेरमलजी ललवानी इचलकरंजी, बाबूलाल जी लालन सिद्धपुर, जगदीश जी भंसाली पाली, प्रदीप जी जेठिया इरोड, मनीष जी नाहटा दिल्ली, सचिन पारख रायपुर, भूरचन्द जी छाजेड़ नवसारी, पारसमल जी बोहरा भिवंडी, सहित कई संघों के पदाधिकारी पधारे और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते हुये एक ही स्वर में कहा कि गणाधीश जी आप 12 मार्च को आचार्य पदवी स्वीकार करो।

श्री पुखराजजी संकलेचा, श्री नरपतजी मंडोवरा, श्री सचिन पारख आदि ने गीतिकाओं के द्वारा गुरु गुणगान किया।

सूरत का यह आयोजन अपने आप में ऐतिहासिक और अनूठा रहा।

पूज्यश्री का सूरत प्रवास

पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. के साथ सूरत संघ की भावभरी विनंती को स्वीकार कर शहादा से तलोदा, वाण्याविहिर, अक्कलकुआ, खापर, सेलंबा, उमरपाडा, मांडवी, कडोद होते हुए ता. 26 जनवरी 2016 को सूरत मॉडल टाउन पधारे, जहाँ पूज्यश्री का भव्यातिभव्य स्वागत किया गया।

श्री बाडमेर जैन संघ, सूरत एवं श्री कुशल कान्ति खरतरगच्छ संघ, सूरत के तत्वावधान में पूज्यश्री का भव्य सामैया संपन्न हुआ। ऐसा ऐतिहासिक प्रवेश लोगों ने प्रथम बार देखा। बाहर से बडी संख्या में श्रद्धालुओं का पदार्पण हुआ।

ता. 27 जनवरी को पूज्यश्री का दर्शन रेजिडेन्सी में पदार्पण हुआ। जहाँ पूज्यश्री की पावन निश्रा में श्री शीतलनाथ जिन मंदिर का खात मुहूर्त्त संपन्न हुआ। इस जिन मंदिर का निर्माण पूज्य मुनिराज ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से हो रहा है।

भूमिपूजन का लाभ श्री पारसमलजी घीया परिवार भिंयाड वालों ने लिया। जबकि खात मुहूर्त्त का लाभ श्री मांगीलालजी धारीवाल परिवार सनावडा वालों ने लिया।

पूज्यश्री ने रात्रि प्रवास हरिपूरा स्थित दादावाडी में किया।

ता. 28 जनवरी को प्रात: पूज्यश्री सहसफणा पार्श्वनाथ मंदिर के दर्शन करते हुए मकनजी पार्क पधारे, जहाँ से पूज्यश्री का भव्य सामैया श्री कुशल कान्ति खरतरगच्छ संघ द्वारा आयोजित किया गया।

पूज्यश्री के प्रवचन के पश्चात् संघ की बैठक हुई। जिसमें अतिशीघ्र भूखण्ड संपादित करने का संकल्प किया गया। उस हेतु धन राशि का संग्रह भी किया गया।

ता. 29 जनवरी को कुशल वाटिका में पूज्यश्री का प्रवचन आयोजित हुआ। कुशल वाटिका परिसर में पूज्यश्री की पावन निश्रा में निर्माणाधीन श्री जिन मंदिर एवं दादावाडी के कार्य का अवलोकन किया।

श्री कुशल कान्ति खरतरगच्छ संघ द्वारा पूज्यश्री की पावन प्रेरणा से पाल में ही विशाल भूखण्ड क्रय किया गया। जिससे पूरे श्री संघ में हर्ष छा गया।

पैदल यात्रा संघ का में उमडा श्रद्धा का सैलाब
कुशल वाटिका में हुआ पैदल यात्रा संघ का भव्य स्वागत
सभापति ने की शिरकत

बाडमेर। प.पू. वसी मालाणी रत्न शिरोमणि ब्रह्मसर तीर्थोद्वारक मुनि मनोज्ञ सागर जी म.सा. की पावन निश्रा में मनोज्ञ मण्डल बाडमेर द्वारा आराधना भवन से कुशल वाटिका पैदल यात्र संघ का हुआ भव्य आयोजन किया गया।

खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष रतनलाल संखलेचा ने बताया कि मुनि मनोज्ञ सागर जी म.सा. की पावन निश्रा में मंगलाचरण कर श्री जिन कान्तिसागर सूरि आराधना भवन से प्रातः 9 बजे गाजे–बाजे, बैण्ड,ढोल–नगाडों के साथ कुशल वाटिका के लिए हजारों श्रद्वालुओं सहित पैदल यात्रा संघ रवाना हुआ।

पैदल यात्रा संघ में सबसे आगे बैण्ड व ढोल वादक पूज्य गुरूदेव के श्रावक वर्ग व हजारों महिलाएं व पुरूष क्रमबद्ध चल रहे थे। पैदल यात्रा संघ का जगह–जगह पर चावलों की रंगोली के साथ स्वागत किया गया।पैदल यात्रा संघ को देखने के लिए हर जगह हजारों श्रावक–श्राविकाए खडे थे व बैड की धुन पर व ढोल–नगाडों के साथ हजारों भक्त नाचते–गाते हुए जयकारो के साथ चल रहे थे।

खरतरगच्छ संघ के महामंत्री केवलचन्द छाजेड ने बताया कि पैदल यात्रा संघ आराधना भवन से रवाना होकर प्रताप जी की पोल, करमु जी की गली, महाबार रोड, रेन बसेरा, चोहटन चौराहा होते हुए कुशल बाटिका पहुंचा। कुशल वाटिका प्रतिष्ठा के बाद प्रथम बार प.पू. मुनि मनोज्ञ सागर जी म.सा. पैदल यात्रा संघ के साथ कुशल वाटिका पहुंचने पर मुख्य द्वार पर कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल व कुशल वाटिका महिला परिषद द्वारा सामैया व चावलों से वधाकर धूम–धाम व गर्मजोशी के साथ भव्य स्वागत किया गया।

गुरूदेव मनोज्ञ सागर जी म.सा. के साथ हजारों श्रदालुओं ने मुनिसुव्रत स्वामी व दादावाडी, नवग्रह मन्दिर व जिन मन्दिरों में दर्शन–वंदन कर मांगलिक श्रवण करवाया गया।उसके बाद पैदल यात्रा संघ धर्म सभा में परिवर्तित हुआ।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए प.पू. आर्यरत्न सागर जी म.सा. ने कहा कि मुनिसुव्रत स्वामी भगवान के प्रति श्रद्वालुओं की अटूट श्रद्वा है, श्रद्वा आस्था के कारण ही आज यहां मेला जैसा वातावरण है। हर श्रद्वालु को भाव–पूर्वक दर्शन–वंदन करना चाहिए।

प.पू. मनोज्ञ सागर जी म.सा. ने कहा कि जैन धर्म के बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी भगवान के दर्शन–वंदन करने से शनि की दशा निवारण होता है। शनिवार को यहां पर हर श्रद्वालु अपनी मन्नत के साथ भव–पूर्वक सेवा पूजा करता है तो दादा उसकी मनोकामना पूर्ण करता है।

कुशल वाटिका ट्रस्ट के को अध्यक्ष बाबूलाल टी बोथरा ने बताया कि प्रवचन के बाद पैदल यात्रा सघ में पधारे हजारों श्रद्वालुओं के स्वामीभक्ति (भोजन) की व्यवस्था मनोज्ञ मण्डल बाडमेर द्वारा की गई। इसके बाद

कुशल वाटिका ट्रस्ट मण्डल द्वारा स्वामी भक्ति के लाभार्थी मनोज्ञ मण्डल का साफा, तिलक व माला से अभिनन्दन किया गया। बोथरा ने बताया कि पैदल यात्रा संघ में पार्श्व मण्डल, जिनशासन विहार सेवा ग्रुप व कुशल वाटिका युवा परिषद, कुशल वाटिका बालिका मण्डल, कुशल दर्शन मित्र मण्डल ब्रह्मसर ग्रुप व अन्य मण्डलो का सहयोग सराहनीय रहा।

मुनि मनोज्ञ सागर ने कुशल वाटिका का किया निरीक्षण

पूज्य गुरूदेव मुनि मनोज्ञ सागर जी म.सा. रविवार को कुशल वाटिका में विराजमान रहकर सम्पूर्ण कुशल वाटिका परिसर का अवलोकन किया। तत्पश्चात् पालीतणा की तरफ विहार किया।

ज्ञान के बिना क्रिया अधुरी-मुनि मनोज्ञ सागर

बाड़मेर। श्री जिन कान्तिसागर सूरि आराधना भवन में वसी मालाणी रत्न शरोमणि ब्रह्मसर तीर्थोद्वारक मुनि मनोज्ञ सागर जी म.सा. ने प्रवचन के दौरान फरमाया कि मनुष्य जीवन को विनय व्यवहार व ज्ञान का होना जरूरी है, ज्ञान के बिना क्रिया अधुरी है, जब तक हमारा जीवन ज्ञान का मान नही होगा तब हमारे द्वारा किये गये पुरूषार्थ का फल नही मिलेगा। पूज्य गुरूदेव ने कहा कि मनुष्य को समाज में रहते हुए अपना स्वयं के साथ-साथ समाज के भाई बन्धुओं का ध्यान रखकर अपना जीवन यापन करना चाहिए, जीवन में धैर्य का भी बडा महत्व है।

खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष रतनलाल संखलेचा ने बताया कि प.पू. मुनि मनोज्ञ सागर जी म.सा. के जन्म तिथि के उपलक्ष मे बाल मनि नयज्ञ सागर ने गितिका के माध्यम से गुरू के गुणों का बखान किया। डां रणजीतमल मालू, मेवाराम मालू, पवन संखलेचा, प्रकाश बोथरा ने भी गुरूदेव मनोज्ञ सागर के दीर्घायु होन की कामना करते हुए उनके द्वारा जिनशासन के किये गये कार्यो की अनुमोदना की गई।

दादा गुरूदेव का महापूजन सम्पन्न

आराधना भवन में प.पू मनोज्ञ सागर जी म.सा. की पावन निश्रा में 53 जोडो के साथ भव्य दादा गुरूदेव का महापूजन का आयोजन उदय गुरू द्वारा सम्पन्न कराया गया। दादा गुरूदेव के महापूजन में बाल कलाकार गौरव मालू ने भक्ति की रमझट जमाते हुए हर श्रदालु का नाचने को मजबुर किया। महापूजन का लाभ मनोज्ञ मण्डल बाडमेर ने लिया। पूजन सैकडो गुरू भक्तों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

लौद्रवा तीर्थ में 1008 महाअभिषेक महापूजन के साथ संपन्न

जैसलमेर । जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर स्थित भाटी शासकों की राजधानी लौद्रवपुर तीर्थ में जैन ट्रस्ट जैसलमेर के तत्वावधान में रविवार को सहस्त्रफणा चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान का 1008 महा अभिषेक पं. पू. साध्वी देवेन्द्रयशा श्री जी म.सा. व शासन ज्योति म.सा. की पावन निश्रा में हर्षोउल्लास के साथ संपन्न हुआ। लौद्रवपुर तीर्थ में पहली बार त्रिदिवसीय इस महाअभिषेक महापूजन में बीकानेर के विधीकारक रौनक व रोहित भाई ने संगीत की स्वर लहरीयों के साथ शास्त्रोक मंत्रोच्चार के साथ विधीविधान से 1008 महाअभिषेक व महापूजन संपन्न करवाया।

महेन्द्र भाई बापना, जैसलमेर

पूज्यश्री का विहार कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा सूरत, बडौदा, खंभात होते हुए ता. 14 फरवरी 2016 को पालीताना में प्रवेश करेंगे।

संपर्क : पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़, पो. पालीताना-364270 (गुजरात)
फोन- मुकेश-98251 05823, 9784326130, mail- jahajmandir99@gmail.com

अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ के चुनाव संपन्न

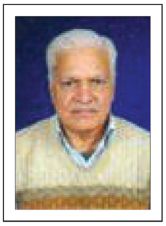

अध्यक्ष
हीराचंद छाजेड़

उपायक्ष
निर्मल कुमार संकलेचा

सचिव
चन्द्रशेखर डागा

कोषाध्यक्ष
ललित कुमार बाफना

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ ट्रस्ट, उज्जैन के चुनाव 20 दिसम्बर को संपन्न हुए। जिसमें श्री हीराचंदजी छाजेड अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष श्री निर्मलकुमारजी संखलेचा, सचिव श्री चन्द्रशेखरजी डागा, कोषाध्यक्ष के पद पर श्री ललितकुमारजी बाफना चुने गये। श्री रमेशचंदजी बांठिया, विजयचंदजी कोठारी, श्री महेन्द्रकुमारजी गादिया, श्री नरेन्द्रकुमारजी धाकड एवं श्री रजतकुमारजी मेहता ट्रस्टी चुने गये।

यह ज्ञातव्य है कि पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा एवं उनकी निश्रा में अति प्राचीन श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ का जीर्णोद्धार चल रहा है। इस जीर्णोद्धार की यह विशेषता है कि मूलनायक परमात्मा का उत्थापन किये बिना यह जीर्णोद्धार चल रहा है। नवनिर्वाचित ट्रस्ट मंडल ने जिन मंदिर के जीर्णोद्धार को शीघ्र पूर्ण कर पूज्य गुरुदेव श्री की निश्रा में शीघ्र प्रतिष्ठा कराने का संकल्प लिया।

गुरू की भक्ति भावो की अभिव्यक्ति...

ओ मेरे मणिप्रभ गुरूदेव हो प्यारे,
आप हो वीर शासन के उजियारे,
विनंती सुन लीजिए हमारी गुरूवर,
आचार्य पद स्वीकार कीजिए गुरूवर, ।1।

गच्छ नायक शासन शिरताज हो आप,
आशुकवि पण्डित्य गरिमा के धनी आप,
महा मनीषी गुरू पर नाज हे गच्छ को,
सूरीमंत्र से चमकाओ शासन को, ।2।

गणाधीश खरतरगच्छ की शान हो,
मृदुभाषी प्रखर वक्ता आप महान हो,
नवकार का तृतीय पद स्वीकार कीजिए,
हृदय की भावना अंगीकार कीजिए, ।3।

गच्छ में आएगी पुनः क्रांति गुरूजी,
कुशल गुरू का दिव्य आशीष गुरूजी,
माँ अम्बिका सहाय बनेगी पथ पर हमेशा,
खरतरगच्छाचार्य बन बढे पवन की आशा ।4।

गुरूभक्त
पवन संखलेचा (नमन)

जैसलमेर जुहारिए दु:ख वारिये रे, अरिहंत बिम्ब अनेक तीर्थने नमो रे।।

जैसलमेर के पंचतीर्थी के दर्शनों का लाभ

जैसलमेर महातीर्थ का गौरव पुरे विश्व में सुप्रसिद्व है यही वह पवित्र भूमि है जहां दुर्ग स्थित जिन मंदिर में अति प्राचीन 6600 जिन बिम्ब विराजमान है। यही वो पवित्र भूमि है जहाँ प्रथम दादागुरुदेव श्री जिनदतसूरीश्वर जी म.सा. की वह चमत्कारी चादर, चोलपट्टा एवं मुंहपती सुरक्षित है जो उनके अग्नि संस्कार में अखण्ड रहे थे। यही वो पवित्र भुमि है जहां आचार्य जिन भद्रसूरी द्वारा पंद्रहवीं शताब्दी में स्थापित दुनिया का अति प्राचीन ज्ञान भंडार है जिसमें अति दुर्लभ विजय पताका महायंत्र, पन्ना व स्फटिक की मूर्तियां तथा तिल जितनी प्रतिमा और जौ जितना मंदिर, चौदहवीं सदी में मन्त्रित की हुई ताम्बे की शलाका लगाकर श्री आचार्य जिनवर्धनसूरि जी महाराज द्वारा-स्थिर की हुई जिन प्रतिमा एवं भैरव की मूर्ति, अनेक चमत्कारी दादावाडीया, उपाश्रय, अधिष्ठायक देव स्थान एवं पटवों की हवेलियां आदि देखने योग्य स्थान है।लौद्रवपुर के अधिष्ठायक देव भी बहुत चमत्कारिक है।भाग्यशालियों को ही उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त होता है। यहाँ दुर्ग स्थित जिनालय, अमरसागर, लौद्रवपुर, ब्रह्मसर कुशल धाम एवं पोकरण का जिन मंदिर व दादावाडीयां आकर्षण कोरणी के कारण पुरे विश्व के जन मानस के लिए आकर्षण का केन्द्र बने हुए है।साथ ही सुनहरे सम के लहरदार धोरों कि यात्रा का लाभ ।यहाँ आधुनिक सुविधायुक्त ए.सी - नॉन ए.सी. कमरे, सुबह नवकारसी व दोनो समय भोजन की व्यवस्था है व साथ ही पंचतीर्थी के लिए वाहन व्यवस्था भी उपलब्ध है।

श्री जैसलमेर लौद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, जैसलमेर, 345001 (राजस्थान) , फोन - 02992-252404

साधु साध्वी समाचार

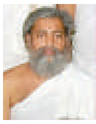

पूज्य मुनिराज ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. ठाणा 2 बीकानेर चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् फलोदी पधरे। वहाँ से जैसलमेर, ब्रह्मसर होते हुए बाडमेर पधरे। जहाँ उनका भव्य स्वागत किया गया। प्रवचनों की श्रृंखला चली। वहाँ से कुशल वाटिका पधरे। वहाँ से सांचोर होते हुए पालीताना पधारेंगे। संभवत: फरवरी के दूसरे या तीसरे सप्ताह में पालीताना पधारे जायेंगे।

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. ठाणा 2 बाडमेर, सांचोर, अहमदाबाद होते हुए पालीताना पधारे गये हैं।

पूज्य मुनि श्री मणिरत्नसागरजी म. दिल्ली से विहार कर जयपुर पधारे। दो तीन दिनों की स्थिरता के पश्चात् पालीताना की ओर विहार किया है।

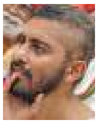

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. समयप्रभसागरजी म. पू. विरक्तप्रभसागर जी म. पू. बाल मुनि मलयप्रभसागरजी म. ठाणा 4 तलोदा से विहार कर वाण्याविहिर, अक्कलकुआं पधरे। वहाँ से पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 11 के साथ विहार कर खापर, डेडियापाडा, राजपीपला होते हुए 2 फरवरी को बडौदा पधारे। वहाँ से पालीताना की ओर विहार किया है।

पूज्य मुनि श्री मैत्रीप्रभसागरजी म. ने जयपुर से पालीताना की ओर विहार किया है।

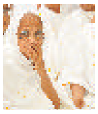

पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा बाडमेर, सांचोर होते हुए शंखेश्वर पधारे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से निर्मित श्री आदिनाथ मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की वर्षगांठ का आयोजन किया गया। वहाँ से पालीताना की ओर विहार किया है।

पूजनीया गणरत्ना पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 9 बलसाणा तीर्थ के दर्शन कर दोंडाइचा, खेतिया, खापर होते हुए पालीताना की ओर विहार कर रहे हैं।

पूजनीया मारवाड ज्योति श्री सूर्यप्रभा श्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 20 नंदुरबार पधारे हैं। वहाँ से खानदेश, राजपीपला होते हुए पालीताना की ओर विहार कर रहे हैं।

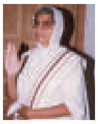

पूजनीया तपोरत्ना श्री सुलक्षणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा 4 शंखेश्वर होते हुए ता. 4 फरवरी को पालीताना पधार गये है।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा 11 दोंडाइचा से विहार कर ता. 20 जनवरी को नंदुरबार पधरे, वहाँ से अक्कलकुआं, खापर, सेलंबा, डेडियापाडा, राजपीपला होते हुए ता. 2 फरवरी को बडौदा पधारेंगे। वहाँ से पालीताना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री सम्यक्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 उग्र विहार करते हुए पूना पधारे। वहाँ से भिवंडी होते हुए वापी, सूरत की ओर विहार किया है। वे संभवत: फरवरी के तीसरे सप्ताह तक पालीताना पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 8, पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 6 उग्र विहार कर इचलकरंजी, पूना, भिवंडी, वापी, सूरत होते हुए पालीताना की ओर विहार कर रहे हैं। वे संभवतः फरवरी के तीसरे सप्ताह तक पालीताना पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा विहार कर श्री गिरनार तीर्थ पधार गये हैं। वहाँ से पालीताना की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 6 जलगांव, अमलनेर, शहादा, खापर, राजपीपला होते हुए पालीताना की ओर विहार कर रहे हैं।

पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. ठाणा 3 पालीताना पधार गये हैं।

पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 पालनपुर, मेहसाना, अहमदाबाद होते हुए पालीताना पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 बाडमेर से विहार कर सांचोर पधारे हैं। वहाँ से पालीताना की ओर विहार किया है।

पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा अहमदाबाद से विहार कर धोलका होते हुए पालीताना की ओर विहार कर रहे हैं।

पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 कच्छ से पालीताना की ओर पधार रहे हैं।

पू. साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा 7 भिवंडी, मुंबई आदि क्षेत्रों में विचरण करते हुए वापी, नवसारी, सूरत, बडौदा होते हुए पालीताना पधार रहे हैं।

पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 मालव प्रदेश से विहार करते हुए पालीताना पधार रहे हैं।

युवा परिषद् की देशव्यापी लहर

प.पु. गुरूदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आशीर्वाद प्रेरणा एवं निर्देशन में स्थापित अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की लहर देश भर में छाई हुई है, अपने स्थापन के कुछ महीनो में ही परिषद् की चालीस से अधिक शाखाओं का गठन हो चूका है एवं जल्द ही देश भर में पचास से अधिक शाखाओं का निर्माण हो जायेगा, राष्ट्रिय कार्यकारिणी एवं सभी शाखाओं के सदस्य आगामी मार्च में पालिताना में होने वाले खरतरगच्छ महासम्मेलन की तैयारियों में जोर शोर से लगे हुए है, सभी शाखाएं आपस में संकलन स्थापित कर समूचे राष्ट्र में साधू साध्वीजी की विहार व्यवस्था का कार्य आयोजनबद्ध तरीके से कर रही है, पिछले एक महीने में सूरत, धुलिया, दोंडाइचा, मालेगांव, शहादा, मांडवला जालोर, खेतिया, नंदुरबार, अक्कलकुआ, सांचोर, बेटावद, खापर, सेलम्बा, गदग आदि कई शाखाओं का गठन हुआ है, सभी शाखाओं के अध्यक्ष, कार्यकारिणी एवं समस्त सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

धनपत कानुंगो, राष्ट्रिय संयोजन, प्रसार-प्रचार, अ. भा. खरतर. युवा परिषद

अखिल भारतीय श्री खरतरगच्छ युवा परिषद गदग का गठन

अखिल भारतीय श्री खरतरगच्छ युवा परिषद गदग शाखा का गठन किया गया है। मुख्य अतिथि जवेरीलाल जी वी. बेंदा एवं पवनजी लुंकड़ के नेतृत्व में पदाधिकारीयों का चयन सर्वसमती से किया गया है। अध्यक्ष-मनीष C. बाफना, उपाध्याय- प्रवीण H. सकलेंचा, कार्यदर्शी- दिनेश N. भंसाली, सकार्यदर्शी- धीरज P. बाफना, खजांची- प्रवीण B. सकलेचा एवं कार्यकारिणी सदस्य मनोज बाफन, प्रवीण सकलेचा, दिनेश भंसाली, प्रवीण B. सकंलेचा एवं धीरज P. बाफना चुने गये एवं निष्ठा पूर्वक कार्य करने की शपथ दिलाई गई।

आचार्य वि. यशोदेवसूरि जन्म शताब्दी महोत्सव आयोजित

पालीताणा के तलेटी रोड़ स्थित साहित्य मंदिर संस्था में साहित्य कलारत्न आचार्य विजय यशोदेवसूरिजी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष में दि. 11 जनवरी को सिद्धाचल गिरिराज पूजन का आयोजन किया गया। पूजन में जल–चंदन आदि अष्ट द्रव्यों द्वारा गिरि पूजन कर विश्व शांति की मंगलकामना की गयी।

इससे पूर्व साहित्य कलारत्न आचार्य यशोदेवसूरिजी महाराज के जन्म शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष में गुणानुवाद सभा का भव्य आयोजन साहित्य सभागार में किया गया। प्रवचन में गणाधीश उपाध्याय मणिप्रभसागरजी महाराज के शिष्य मुनि मनीषप्रभसागरजी महाराज ने सभा में अपार श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुये कहा कि संत का जीवन पूरी समष्टि के लिए होता है।

उन्होंने कहा कि साहित्य कलारत्न आचार्य यशोदेवसूरि महाराज के जीवन में सरलता, मधुरता का अहसास सहज ही हो जाता था। साहित्य और कला के क्षेत्र में उनके अवदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

आचार्यश्री के शिष्य मुनि जयभद्रविजयजी महाराज ने कहा कि जैन संघ में साहित्य के इतिहास का कार्य गहराई से करने वाले आप थे। शिल्प कला के क्षेत्र में आपने 100 के उपरांत जिनमंदिरों के निर्माण का मार्गदर्शन देकर समाज को लाभान्वित किया। अनेक विधाओं से आपने शासन की सेवा कर जीवन सार्थक किया।

प्रवचन के आरम्भ में आचार्य जयंतसेनसूरिजी महाराज ने नवकार मंत्र और मंगलाचरण का पाठ कर विश्व शांति का संदेश देते हुये देव–गुरु वंदन किया। सभा में तीन पुस्तकों का विमोचन किया गया।

इस सभा में आचार्य जयानंदसूरिजी, आचार्य जयंतसेनसूरिजी, आचार्य अभयसेनसूरिजी, मुनि चारित्ररत्नविजयजी, मुनि मनीषप्रभसागरजी, मुनि जयभद्रविजयजी, मुनि भुवनचन्द्रजी सहित अनेक साधु–साध्वी और कनुभाई शाह, भागीरथ शर्मा आदि अनेक पुरुष व महिलाओं ने भाग लिया। दोपहर में सिद्धचक्र महापूजन का आयोजन किया गया। जिसमें सभी आराधकों भाग लिया। प्रेषक– भागीरथ शर्मा, मेनेजर, हरि विहार, पालीताणा

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।

आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

तत्त्व परिक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 116

ऐतिहासिक घटनाक्रम में जिससे दो व्यक्ति संबद्ध है। उस घटना का उल्लेख एक पंक्ति में किया गया है तथा दो व्यक्तियों में से एक व्यक्ति का उल्लेख भी किया गया है। आप घटना से जुड़े दूसरे व्यक्ति का उल्लेख करें- (कम से कम 15 सही होने चाहिये)

1. जिनदत्तसूरि- तुम योगिनीपुर मत जाना- ....

2. श्रेणिक राजा- पुत्र ने पिता को काराग्रह में डाला- ....

3. पाँच पाण्डव- अंधे का पुत्र अंधा ही होता है- ....

4. इन्द्रमहाराज- किसी की सहायता से कोई भी तीर्थंकर नहीं बना- ....

5. सुरसुन्दरी- बहिन के सम्मुख बहिन ने नृत्य किया- ....

6. भरत चक्रवर्ती- भाई को मारने के लिये मुष्ठि प्रहार हेतु तैयार हुआ- ....

7. गज सुकुमाल- ससुर ने जमाई को मोक्ष की पगडी पहनायी- ....

8. राजीमती- देवरजी! तुम मुनि हो, फिर ऐसा चिन्तन क्या योग्य है? - ....

9. नंदीवर्धन- अभी तो मातृ-पितृ के स्वर्गवास का शोक भी नहीं हटा है।- ....

10. बाहुबली- वीरा मोरा गज थकी उतरो- ....

11. श्री जिनहरिसागरसूरि- तुम्हारे द्वारा रचित रचनाओ तुम्हें तुम्हारा नाम डालना ही है।- ....

12. दुर्लभराजा- मुनिवर्य! तुम्हारा आचरण खरा हैं।- ....

13. ज्ञानविमलसूरि- तुम जैन थंभ ना गाजी छो रे- ....

14. कोशा वेश्या- मैं तुम्हारी चित्रशाला में चातुर्मास करना चाहता हूँ।- ....

15. मदनरेखा- यह दोष भाई का नहीं, कर्म का है।- ....

16. सिद्धसेन दिवाकर- तुम्हारे भगवान मेरी प्रार्थना नहीं सह पायेंगे।- ....

17. गुरूणीजी- गुर्वाज्ञा बिन यह आतापना तप नहीं, कष्ट बनेगी।- ....

18. जिनप्रभसूरि- रायणवृक्ष से दूध बरसा।- ....

19. साधुजन- अहोकष्टम्! तत्त्वं न ज्ञायते- ....

20. अजयपाल- मैं गुरू द्रौह नहीं कर सकता।- ....

जहाज मन्दिर पहेली का उत्तर पोस्ट कार्ड पर लिखकर भेजे।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा : श्री सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन
मुम्बई-400004 (महा.) मो. 98693 48764

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 मार्च तक पहुँचना जरूरी है।
2. विजेताओं के नाम व सही हल अप्रेल में प्रकाशित किये जायेंगे।
3. प्रथम विजेता को 200 रू. का और 100-100 रु. के चार तथा 50-50 रुपये के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. ग्यारह विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
7. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
श्री धनराजजी-सुनीतादेवी,
उज्ज्वल, गीतांजली,
प्रांजल कोचर
तलोदा (फलोदी)

प्रेषक

नाम ....

पता ....

....

पोस्ट .... पिन | | | | | | | जिला ....

राज्य .... फोन नम्बर | | | | | | | | | | | |

जहाज मंदिर पहेली - 114 का सही उत्तर

1. प्रमाद	2. दुर्व्यवहार	3. पक्षपात
4. विकथा	5. वासना	6. अरति
7. रति	8. मिथ्यात्व	9. हास्य
10. भय	11. मान	12. स्वार्थ
13. माया	14. घृणा	15. राग
16. द्वेष	17. खेद	18. शोक
19. इच्छा	20. लोभ	

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- निकीता गोलेच्छा, कोटूरु

चार पुरस्कार - जेठी बाई कोठारी-फलोदी, संगीता बुरड़-ब्यावर, नरेश सिंघी-मालपुरा, सुशीला डोसी-जोधपुर

छह पुरस्कार - मोहित जैन-तिरुपात्तुर, नितु गोलेच्छा-धमतरी, मांगीलाल बोहरा-तलोदा, ललित बरड़िया-आगरा, मनीष लूणावत-ऊटी, चेतना बच्छावत - अजमेर

इनके उत्तर पत्रक सही थे- साध्वी श्री विशालप्रभाश्रीजी म.सा.- पालीताणा, साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी- धमतरी, कामिनी मेहता- जोधपुर, पक्षाल धारीवाल- कोटुर, निर्मला बच्छावत- फलोदी, कृष्णा कोचर- भानपुरा, निर्मला पींचा- रायपुर, सुशीला जीरावला- जोधपुर, पुष्पा डोसी- ब्यावर, पुष्पा जैन- जगंदलपुर, पिस्ता गोलेच्छा- जयपुर, सुन्दर बाई राखेचा- त्रिची, धनसुख छाजेड- हैदराबाद, कंचन ललवाणी- मुम्बई, पुष्पा जैन- उदपुर, सरला गोलेछा- लालबर्रा, सुचित्रा भंसाली- नोयडा, स्वरूपचंद जैन- जयपुर, प्रमिला मेहता- जयपुर, सीमा भंडारी- ब्यावर, स्नेहलता चौरडिया- जयपुर, मंगला भंसाली- शाहादा, ताराबाई कोठारी- भाइन्दर, चन्द्रा कोचर- भाइन्दर, जयश्री कोठारी- भाइन्दर, शांति बाई पारख- धमतरी, गौतमचंद कोठारी- फलोदी, इशिका सिंघी- मालपुरा, डॉ. सुनीता जैन- जयपुर, चेतन राखेचा- त्रिची, हितेश मेहता- बालोतरा, विनीता बच्छावत- फलोदी, कुशल ललवाणी- तिरूपात्तुर, दर्शन कोठारी- अमलनेर, पारस जैन- टिण्डीवनम्, शान्ता चोपडा- रतलाम, मोहिनी देवी पारख- धमतरी, शान्ता गोलेछा- टिण्डीवनम्, सुशील भण्डारी- कोटा, अर्चना खटोड- ब्यावर, मंगलाबाई चतुरमुथा- सारंगखेडा, इन्द्रा देवी संखलेचा- हैदराबाद, मंजू कांस्टिया- कोलकाता, माणक कंवर बोथरा- इन्दौर, सविता जैन- मुम्बई, ममता गुलेच्छा- दोंडाइचा, आदित्य जैन- बामनिया, शांति देवी जैन- जोधपुर, पद्मा मेहता- अजमेर, रमणिकलाल डोसी- मंदसौर, फीणी बेन मेहता- कोटूर, श्वेता भंडारी- बूंदी, पुष्पा चोपडा- पचपदरा, राज भंडारी- बूंदी, सीमा छाजेड- उज्जैन, मनोहरलाल झाबख- कोटा, पूजा जैन- बडौदा

अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद भादरेश शाख का गठन

भादरेश ज्योति पुंज प.पु गुरूदेव मुनि श्री मनोज्ञसागर जी म.सा. ''शास्त्री'' की निश्रा में ता. 25.01.16 गुरूदेव के जन्मोत्सव पर अ.भा.ख.यु.प. में एक कड़ी और जोडते हुए भादरेश नगर शाखा का गठन किया गया। जिसमें सर्वसमिति से अध्यक्ष राजेंद्र छाजेड़, उपाध्यक्ष कैलाश छाजेड़, सचिव सवाई छाजेड़, कोषाध्यक्ष मुकेश छाजेड़, सुचना मंत्री संजय छाजेड़ को मनोनीत किया गया।

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

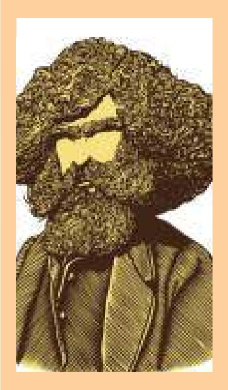

जटाशंकर और उसकी पत्नी नये घर में रहने आये थे। एकाध महिना बीता था। एक दिन पडौसी घटाशंकर उससे मिलने आया। उसने कहा- क्या राज है तुम्हारी खुशियों का!

हमने ऐसा जोडा पहली बार देखा है। तुम्हारे घर का दृश्य तो मुझे दिखाई नहीं देता। पर भीतर की आवाजें मुझे सुनाई देती है। तुम्हारे घर से जब देखो तब हँसने की आवाजें आती रहती है।

ऐसा लगता है कभी तुम हँसते हो... कभी तुम्हारी पत्नी! वाह! क्या शानदार जीवन है। इतना आनंदित जीवन हमने पहली बार देखा है।

लगता है तुम दोनों में कभी लडाई होती नहीं।

जटाशंकर ने कहा- बिल्कुल भाई! हमारे जीवन में परम आनंद है।

असल में हम दोनों की लडाई तो होती ही रहती है। मेरी पत्नी थोडी क्रोधी स्वभाव की है। जब लडाई होती है तो वह बेलन आदि मुझ पर फैकती है। जब उसका निशाना चूक जाता है तो मैं हँसता हूँ। और लग जाता है तो वो हँसती है।

बस! इस प्रकार हँसी और आनंद के साथ हमारी जीवन गाडी बडे मजे से आगे बढ रही है।

घटाशंकर हँसी का राज समझ कर सन्न रह गया।

संसार की हँसी तो ऐसी ही है क्योंकि संसार से शाश्वत हँसी मिल ही नहीं सकती। और जो मिलती है वह क्षणिक होती है। स्थायी आनंद तो आत्मा का अपने स्वभाव में रमण करने से ही प्राप्त होता है।

सम्मेलन के संबंध में सूचना

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के आह्वान पर पालीताना की पावन भूमि पर खरतरगच्छ का साधु साध्वी श्रावक श्राविका सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

सकल श्री संघ से निवेदन है कि आप सभी सम्मेलन में अवश्य पधारें। ताकि गच्छ विकास आदि विषयों पर गंभीरता से गहन विचार विमर्श कर निर्णय किये जा सके।

पूज्यश्री का आग्रह है कि सम्मेलन में विचार विमर्श करने हेतु आप अपने सुझाव अवश्य भिजवावें।

अपने सुझाव इस पते पर भेजें-

पूज्य गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.

श्री जिन हरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड, पो. पालीताना- 364270 जिला- भावनगर, गुजरात

मेल - sammelan2016@gmail.com

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन

www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408